

मिस्र की ममियों में बंद धमनियों के संकेत

मिस्र व अन्य स्थानों की ममियों के स्कैन से पता चला है कि उस समय भी लोगों की हृदय धमनियां रुंध जाती थीं और उनमें प्लाक जमा होता था। इस आधार पर कुछ चिकित्सक कह रहे हैं कि इस बीमारी -



एथेरोस्क्लेरोसिस - के लिए सिर्फ आधुनिक जीवन शैली को दोष देना व्यर्थ है।

दरअसल हृदय रोगों के बारे में माना जाता है कि आधुनिक भोजन (जिसमें जंक फूड भी शामिल है) की वजह से धमनियों की दीवारों पर कोलेस्ट्रॉल और प्रतिरक्षा कोशिकाओं का मलबा जमा होता रहता है। इसकी वजह से धमनियां संकरी हो जाती हैं और उनकी दीवार सख्त हो जाती है। मगर कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय के ग्रेग थॉमस के मुताबिक प्राचीन ममियों के अध्ययन से लगता है कि प्लाक जमा होने के कारण और भी हो सकते हैं।

थॉमस व उनके दल ने विभिन्न प्राचीन आबादियों में संरक्षित 137 ममियों का सीटी स्कैन किया। इनमें मिस्र, पेरू, दक्षिण पश्चिमी अमेरिका के प्यूब्लोअन्स और अलास्का के उनन्गन शामिल थे। जहां मिस्री ममियों को रसायनों की मदद से संरक्षित रखा गया था वहीं अन्य स्थानों की ममियां या तो कम तापमान या अत्यंत सूखे मौसम की वजह से संरक्षित रही थीं। इन चारों समूह की जीवन शैलियां भी भिन्न-भिन्न थीं। प्यूब्लोअन्स किसान थे और कुछ भोजन बटोरकर भी प्राप्त करते थे। दूसरी ओर, उनन्गन शिकारी-संग्रहकर्ता थे और पूरी तरह समुद्री भोजन पर निर्भर थे।

स्कैन से पता चला कि 137 ममियों में से 47 (34

प्रतिशत) की धमनियों में प्लाक जमा था। चारों समूहों में ही यह स्थिति देखी गई। शोधकर्ताओं ने *द लैंसेट* शोध पत्रिका में बताया है कि इन प्राचीन समूहों में इस रोग का स्तर लगभग आधुनिक इंसानों के बराबर था। इसके आधार

पर उनका कहना है कि आजकल की जीवन शैली का रोना रोने से काम नहीं चलेगा। एथेरोस्क्लेरोसिस के कुछ और कारण भी ज़रूर हैं। अलबत्ता, अन्य कई वैज्ञानिक उनकी बात से सहमत नहीं हैं।

एक तो यह हो सकता है कि जिन ममियों का अध्ययन किया गया, वे उस युग के आभिजात्य वर्ग के लोगों की हैं। उनका खानपान उस समय का प्रतिनिधि न होकर आजकल के उच्च वसा युक्त भोजन के ज़्यादा करीब रहा होगा। इसके अलावा, यह भी सम्भव है कि धूम्रपान और संक्रमणों की वजह से धमनियों में प्लाक जमा हुआ है।

वैसे थॉमस का मत है कि उन्होंने जिन ममियों का अध्ययन किया है वे आभिजात्य वर्ग के लोगों की नहीं हैं। वे तो उस समय के आम लोगों की हैं। वैसे जंतुओं पर किए गए कुछ अध्ययनों से यह भी स्पष्ट हुआ है कि बाकी कारकों के रहते हुए भी यदि रक्त में वसा का उच्च स्तर न हो, तो प्लाक जमा नहीं होता।

कुल मिलाकर थॉमस का आग्रह है कि हमें यह दावा ज़ोर शोर से नहीं करना चाहिए कि भोजन में बदलाव करके हम हृदय रोग का पूर्ण बचाव कर सकते हैं। हम शायद इसकी संभावना को थोड़ा कम कर सकते हैं पर पूरी तरह टाल नहीं सकते। **(स्रोत फीचर्स)**